

## सूरह हाक्का - 69



सूरह हाक्का के संक्षिप्त विषय  
यह सूरह मक्की है, इस में 52 आयतें हैं।

- इस का प्रथम शब्द ((अल हाक्का)) है जिस से यह नाम लिया गया है। और इस का अर्थ है: वह घड़ी जिस का आना सच्च है। इस में प्रलय के अवश्य आने की सूचना दी गई है।
- आयत 4 से 12 तक उन जातियों की यातना द्वारा शिक्षा दी गई है जिन्होंने प्रलय का इन्कार किया तथा रसूलों को झुठलाया। फिर आयत 13 से 18 तक प्रलय का भ्यावः दृश्य दिखाया गया है।
- आयत 19 से 37 तक सदाचारियों तथा दुराचारियों का परिणाम बताया गया है। फिर काफ़िरों को संबोधित कर के उन पर कुर्आन तथा रसूल की सच्चाई को उजागर किया गया है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अल्लाह की तस्बीह (पवित्रतागान) बयान करते रहने का आदेश दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त  
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जिस का होना सच्च है।
2. वह क्या है जिस का होना सच्च है?
3. तथा आप क्या जानें कि क्या है जिस का होना सच्च है?
4. झुठलाया समूद तथा आद (जाति) ने अचानक आ पड़ने वाली (प्रलय) को।
5. फिर समूद, तो वह ध्वस्त कर दिये गये अति कड़ी ध्वनी से।
6. तथा आद, तो वह ध्वस्त कर दिये

الْحَاقَّةُ ۝

مَا الْحَاقَّةُ ۝

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحَاقَّةُ ۝

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوَاهِمْ ۝

فَأَمَّا ثَمُودُ فَأُهْلِكُوا بِالطَّاغِيَةِ ۝

وَأَمَّا عَادُ فَأُهْلِكُوا بِرِيحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ۝

गये एक तेज़ शीतल आँधी से।

7. लगाये रखा उसे उन पर सात रातें तथा आठ दिन निरन्तर, तो आप देखते कि वह जाति उस में ऐसे पछाड़ी हुई है जैसे खजूर के खोकले तने<sup>[1]</sup>
8. तो क्या आप देखते हैं कि उन में से कोई शेष रह गया है?
9. और किया यही पाप फिरऔन ने और जो उस के पूर्व थे, तथा जिन की बस्तियाँ औधी कर दी गई।
10. उन्होंने नहीं माना अपने पालनहार के रसूल को। अन्ततः उस ने पकड़ लिया उन्हें, कड़ी पकड़।
11. हम ने, जब सीमा पार कर गया जल, तो तुम्हें सवार कर दिया नाव<sup>[2]</sup> में।
12. ताकि हम बना दें उसे तुम्हारे लिये एक शिक्षा प्रद यादगार। और ताकि सुरक्षित रख लें इसे सुनने वाले कान।
13. फिर जब फूँक दी जायेगी सूर नरसिंघा) में एक फूँक।
14. और उठाया जायेगा धरती तथा पर्वतों को तो दोनों चूर-चूर कर दिये जायेंगे<sup>[3]</sup> एक ही बार में।
15. तो उसी दिन होनी हो जायेगी।

سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَثَمَينَةَ أَيَّامٍ  
حُسُومًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرْعَى كَأَنَّهُمْ  
أَعْيَارٌ نَقَلٌ خَاوِيَةٌ ۝

فَهَلْ تَرَى لَهُمْ مِنْ بَاقِيَةٍ ۝

وَجَاءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهُ وَالْمُؤْتَفِكَاتُ  
بِالْحَاطِئَةِ ۝

فَعَصَوْا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ أَخَذَةً  
رَابِيَةً ۝

إِنَّا لَنَاطِقُوا الْمَاءَ حَمَلُنَاكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ۝

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَنَعْيَمًا أَدْنَى  
وَأَعْيَةً ۝

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ وَاحِدَةٌ ۝

وَحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً  
وَاحِدَةً ۝

فَيَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝

- 1 उन के भारी और लम्बे होने की उपमा खजूर के तने से दी गई है।
- 2 इस में नूह (अलैहिससलाम) के तूफान की ओर संकेत है। और सभी मनुष्य उन की संतान हैं इसलिये यह दया सब पर हुई है।
- 3 देखिये: सूरह ताहा, आयत: 20, आयत: 103, 108।

16. तथा फट जायेगा आकाश, तो वह उस दिन क्षीण निर्बल हो जायेगा।
17. और फरिश्ते उस के किनारों पर होंगे तथा उठाये होंगे आप के पालनहार के अर्श (सिंहासन) को अपने ऊपर उस दिन आठ फरिश्ते।
18. उस दिन तुम (अल्लाह के पास) उपस्थित किये जाओगे, नहीं छुपा रह जायेगा तुम में से कोई।
19. फिर जिसे दिया जायेगा उस का कर्मपत्र दायें हाथ में वह कहेगा: यह लो मेरा कर्मपत्र पढ़ो।
20. मुझे विश्वास था कि मैं मिलने वाला हूँ अपने हिसाब से।
21. तो वह अपने मन चाहे सुख में होगा।
22. उच्च श्रेणी के स्वर्ग में।
23. जिस के फलों के गुच्छे झुक रहे होंगे।
24. (उन से कहा जायेगा): खाओ तथा पियो आनन्द ले कर उस के बदले जो तुम ने किया है विगत दिनों (संसार) में।
25. और जिसे दिया जायेगा उस का कर्मपत्र उस के बायें हाथ में तो वह कहेगा: हाय! मुझे मेरा कर्मपत्र दिया ही न जाता!
26. तथा मैं न जानता कि क्या है मेरा हिसाब?!

وَانشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ۝

وَالْمَلَائِكَةُ عَلَىٰ أَرْجَائِهَا وَيَحْمِلُ عَرْشُ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَلَاثِيَّةٌ ۝

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَىٰ مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ۝

فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَيَقُولُ مَا أَوْمَرْتُكُمْ بِالْكِتَابَةِ ۝

إِنِّي ظَنَنْتُ أَنِّي مُلَاقٍ حِسَابِيَّةٌ ۝

فَهُمَنِي عِيشَةً رَّاضِيَةً ۝

فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝

فَطَوْفُهُمْ أَزْوَاجٌ ۝

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ الْغَالِيَةِ ۝

وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِشِمَالِهِ فَيَقُولُ يُلَيِّنُنِي لِأَوْتٍ كَثِيرَةٍ ۝

وَلَمْ أَذِرْ مَا حِسَابِيَّةٌ ۝



27. काश मेरी मौत ही निर्णायक<sup>[1]</sup> होती!
28. नहीं काम आया मेरा धन।
29. मुझ से समाप्त हो गया मेरा प्रभुत्व<sup>[2]</sup>।
30. (आदेश होगा कि) उसे पकड़ो और उस के गले में तौक डाल दो।
31. फिर नरक में उसे झोंक दो।
32. फिर उसे एक जंजीर, जिस की लम्बाई सत्तर गज है में जकड़ दो।
33. वह ईमान नहीं रखता था महिमाशाली अल्लाह पर।
34. और न प्रेरणा देता था दरिद्र को भोजन कराने की।
35. अतः नहीं है उस का आज यहाँ कोई मित्र।
36. और न कोई भोजन, पीप के सिवा।
37. जिसे पापी ही खायेंगे।
38. तो मैं शपथ लेता हूँ उस की जो तुम देखते हो।
39. तथा जो तुम नहीं देखते हो।
40. निःसंदेह यह (कुर्आन) अदरणीय रसूल का कथन<sup>[3]</sup> है।

- يَلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۝  
مَا أَغْنَىٰ عَنِّي مَالِيهِ ۝  
هَلَكَ عَنِّي سُلْطَانِيهِ ۝  
خُدُّوهُ فَقُلُّوهُ ۝  
ثُمَّ الْوَحْجِيزَ صَلُّوهُ ۝  
ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوهُ ۝  
إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللهِ الْعَظِيمِ ۝  
وَلَا يَخْضُ عَلَىٰ طَعَامِ الْمُسْكِينِ ۝  
فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هُنَا حَمِيمٌ ۝  
وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غَنِيلِينَ ۝  
لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُونَ ۝  
فَلَا أَقْسَمُ بِمَا تُبْصَرُونَ ۝  
وَمَا لَا تُبْصَرُونَ ۝  
إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝

1 अर्थात् उस के पश्चात् मैं फिर जीवित न किया जाता।

2 इस का दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि परलोक के इन्कार पर जितने तर्क दिया करता था आज सब निष्फल हो गये।

3 यहाँ अदरणीय रसूल से अभिप्राय मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं। तथा सूरह तकवीर आयत 19 में फरिश्ते जिब्रिल (अलैहिससलाम) जो वही

41. और वह किसी कवि का कथन नहीं है।  
तुम लोग कम ही विश्वास करते हो।
42. और न यह किसी ज्योतिषी का कथन  
है, तुम कम ही शिक्षा ग्रहण करते हो।
43. सर्वलोक के पालनहार का उतारा  
हुआ है।
44. और यदि इस (नबी) ने हम पर कोई  
बात बनाई<sup>[1]</sup> होती।
45. तो अवश्य हम पकड़ लेते उस का  
सीधा हाथ।
46. फिर अवश्य काट देते उस के गले  
की रग।
47. फिर तुम से कोई (मुझे) उस से  
रोकने वाला न होता।
48. निःसंदेह यह एक शिक्षा है सदाचारियों  
के लिये।
49. तथा वास्तव में हम जानते हैं कि तुम  
में कुछ झुठलाने वाले हैं।
50. और निश्चय यह पछतावे का कारण  
होगा काफ़िरों<sup>[2]</sup> के लिये।

- وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ قَلِيلًا مَّا تُوْمِنُونَ ﴿٤١﴾  
وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ﴿٤٢﴾  
تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٣﴾  
وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضُ الْأَقَاوِيلِ ﴿٤٤﴾  
لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ﴿٤٥﴾  
ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ﴿٤٦﴾  
فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِينَ ﴿٤٧﴾  
وَلَئِنَّ لَذِكْرَ الْفَاسِقِينَ ﴿٤٨﴾  
وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِينَ ﴿٤٩﴾  
وَلَئِنَّ الْحَسْرَةَ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٥٠﴾

लाते थे वह अभिप्राय हैं। यहाँ कुर्आन को आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन इस अर्थ में कहा गया है कि लोग उसे आप से सुन रहे थे। और इसी प्रकार आप जिब्रील (अलैहिस्सलाम) से सुन रहे थे। अन्यथा वास्तव में कुर्आन अल्लाह ही का कथन है जैसा कि आगामी आयत: 43 में आ रहा है।

- 1 इस आयत का भावार्थ यह है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अपनी ओर से वही (प्रकाशना) में कुछ अधिक या कम करने का अधिकार नहीं है। यदि वह ऐसा करेंगे तो उन्हें कड़ी यातना दी जायेगी।
- 2 अर्थात् जो कुर्आन को नहीं मानते वह अन्ततः पछतायेंगे।

51. वस्तुतः यह विश्वासनीय सत्य है।
52. अतः आप पवित्रता का वर्णन करें अपने  
महिमावान पालनहार के नाम की।

وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ۝  
فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝

